उन्मेष

(१)

श्रीश्रीमाँ की कथा – (इं ३०.०७.०८)

वर्तमान में मनुष्य में मनन शक्ति का अभाव देखा जाता है। इस मनन शक्ति के अभाव से आध्यात्मिक दैन्यता उत्पन्न होती है। साधारण मनुष्य भगवान को कुछ भी दे नहीं सकता, सब रख लेता है अपने क्षुद्र अहंकार के लिए। मनुष्य के मध्य इस रूप क्लिष्ट वृत्ति ही है अमति। इसको ही कामना रूप पाप कहा जाता है। विराट् सत्य को ज्ञात करने के लिए तपस्या के समय धैर्य एवं धीरता की जरूरत होती है। इस धीरता को धीमान तपस्वी ही अर्जन करने में सक्षम होते हैं। धीरता लाभ होती है, मन एवं माया के अलौकिक ज्ञान द्वारा। धीरता योगी को ध्यानावस्था में उपनीत करती है, तभी ध्यानी योगी होते हैं मनस्वी। ध्यान होता है हृदय के आकाश में। प्राकृतभुमि के उसपार का ज्ञान हुआ प्रज्ञान। ध्यानयोग में योगी प्रज्ञा में प्रतिष्ठित होकर क्रमशः ज्ञानरूप बोध के सीमा की परिधि को प्रसारित करने लगता है। क्रमशः योगी के हृदयाकाश मध्य ध्वनित होता है शब्द ब्रह्मरूपी वाक् अथवा ब्रह्मघोष। हृदय का चिदाकाश विदीर्ण करते हुए वह वाणी ही योगी को श्रुतिगोचर होती है। योगीगण इसको अनाहत वाणी कहते है। यह ही है स्फोट् प्रणव अथवा ओंकार; इसका दूसरा नाम ''श्रव''। मंत्र के छन्द द्वारा देवता को आवाहन करने से देवता अवश्य ही सूचना देंगे; उनके प्रकट होने की सूचना प्रथम हृदय में

स्पंदन के रूप में प्रतिभात होती है, तत्पश्चात् घोष अथवा अव्यक्त वाणी के आकार में, अवशेष में वैखरी वाक् में उनका प्रकाश संघटित होता है। योगी हृदय में इस वाक् की अभिव्यक्ति के साथ अन्तःचेतना का जो प्रसार होता है, वह ही योगी की ''प्रज्ञान'' अथवा ''प्रविद्'' अवस्था है। योगी हृदय में भगवान के शक्तिपात व्यतीत कुछ भी होने का नहीं है। योगी हृदय में स्फुरित असीम चेतना की परिव्याप्ति से ही योगी साधकगण तब आहरण करता है महाशुन्य की चिन्मय शक्ति।

प्राण शोधन का प्रयोजन आवश्यक है। प्राण की चंचल अवस्था के स्थिरीकरण को प्राण-शोधन कहा जाता है। शोधित प्राण के आविर्भाव से अन्तःचेतना में अंधकार अपसारित होकर आलोक का स्फुरण होता है। तब ध्यानी योगी के अन्तर में विज्ञान जागृत हो उठता है एवं मंत्र चेतना भी जागृत होती है। ध्यानी योगीगण ''मणीषा'' देकर प्राण का शोधन करता है। मणीषा ही विज्ञान है, जो मन के उसपार का ज्ञान है।

(श्रीश्रीमाँ सर्वाणी के लिखित
उन्मेष बंगला पुस्तक से उद्धृतांश)

–हिन्दी अनुवाद : श्रीश्रीमाँ सर्वाणी